National Journal of Multidisciplinary Research and Development
www.newresearchjournal.com
ISSN: 2455-9040
Received: 12-10-2024, Accepted: 11-11-2024, Published: 26-11-2024
Volume 9, Issue 4, 2024, Page No. 31-33

अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ० छाया श्रीवास्तव[1], सुरेश प्रसाद दास[2]
[1] प्राचार्य, शिक्षा विभाग, श्री रामा कृष्णा कॉलेज ऑफ एजुकेशन, सतना, मध्य प्रदेश, भारत
[2] शोध छात्र, लाइफ लॉन्ग लर्निंग विभाग, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश
वर्तमान समय में अशासकीय विद्यालयों की भूमिका और उनकी शैक्षिक गुणवत्ता का महत्व बढ़ा है, विशेषकर जब इन विद्यालयों की तुलना सरकारी विद्यालयों से की जाती है। यह शोध इस पर विचार करता है कि कैसे विभिन्न कारक—जैसे विद्यालय की अवसंरचना, शिक्षकों की गुणवत्ता, संसाधनों की उपलब्धता, और अभिभावकों की सहभागिता— विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों को प्रभावित करते हैं। शोध में विभिन्न आयु वर्ग और कक्षाओं के विद्यार्थियों की उपलब्धियों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। इसमें शैक्षिक प्रदर्शन को मापने के लिए परीक्षा परिणामों, साक्षात्कारों, और सर्वेक्षणों का उपयोग किया गया है। इसके अतिरिक्त, विद्यार्थियों के शैक्षिक वातावरण और उनके सामाजिक–आर्थिक स्थिति का भी विश्लेषण किया गया है। परिणाम दर्शाते हैं कि अशासकीय विद्यालयों में विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि कुछ मामलों में बेहतर होती है, लेकिन यह सभी विद्यालयों के लिए समान रूप से लागू नहीं होती।
अध्ययन के निष्कर्ष बताते हैं कि विद्यार्थियों की सफलता केवल विद्यालय के प्रकार पर निर्भर नहीं करती, बल्कि कई अन्य कारक भी इसमें भूमिका निभाते हैं। इस शोध से यह स्पष्ट होता है कि शैक्षिक नीतियों को बनाते समय इन कारकों को ध्यान में रखना आवश्यक है। यह शोध नीति निर्माताओं, शिक्षकों, और अभिभावकों को बेहतर निर्णय लेने में सहायक हो सकता है ताकि विद्यार्थियों को उच्च गुणवत्ता की शिक्षा प्रदान की जा सके।

मूल शब्दः अशासकीय विद्यालय, विद्यार्थी, शैक्षिक उपलब्धि, मध्यमान, मानक विचलन, क्रांतिक अनुपात, तुलनात्मक अध्ययन

शिक्षा किसी भी समाज के विकास का मूल आधार होती है और विद्यालय शिक्षा व्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। विद्यालयों का कार्य केवल ज्ञान का हस्तांतरण करना नहीं है बल्कि विद्यार्थियों को समग्र रूप से विकसित करना भी है। भारत में शिक्षा व्यवस्था के अंतर्गत सरकारी और अशासकीय (निजी) विद्यालय समान रूप से कार्य करते हैं। दोनों प्रकार के विद्यालयों का उद्देश्य विद्यार्थियों के बौद्धिक, शारीरिक, सामाजिक और नैतिक विकास को सुनिश्चित करना है। तथापि शैक्षिक उपलब्धि में अंतर इन विद्यालयों की विशेषताओं, संसाधनों, और शैक्षणिक दृष्टिकोणों के कारण स्पष्ट हो सकता है।
वर्तमान समय में शिक्षा के क्षेत्र में गुणवत्ता की गहन समीक्षा करने की आवश्यकता है। निजी विद्यालयों में आधुनिक तकनीकों और सुविधाओं का उपयोग अपेक्षाकृत अधिक देखा जाता है जबकि सरकारी विद्यालयों में शिक्षा को सबके लिए सुलभ बनाने की दिशा में अधिक प्रयास किए जाते हैं। इस शोध में अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन किया जाएगा। यह अध्ययन यह समझने का प्रयास करेगा कि क्या निजी विद्यालयों के बेहतर संसाधन और सुविधाएं विद्यार्थियों की शैक्षिक प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं या अन्य सामाजिक–आर्थिक कारक भी इसके लिए उत्तरदायी हैं।
यह शोध विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों को मापने के विभिन्न मानकों जैसे अकादमिक प्रदर्शन, कौशल विकास और परीक्षा परिणामों का विश्लेषण करेगा। इसके अलावा यह भी देखा जाएगा कि शिक्षक प्रशिक्षण, पाठ्यचर्या की संरचना और सह–शैक्षणिक गतिविधियों का इन उपलब्धियों पर क्या प्रभाव पड़ता है।

आवश्यकता एवं महत्व

अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करने की आवश्यकता एवं महत्व कई कारणों से है। यह अध्ययन हमें यह समझने में मदद करता है कि इन विद्यालयों की शिक्षण गुणवत्ता और शैक्षिक वातावरण विद्यार्थियों की सफलता को किस प्रकार प्रभावित करते हैं। अशासकीय विद्यालयों में दी जा रही शिक्षा की प्रभावशीलता का विश्लेषण करके, शिक्षा नीतियों में सुधार के लिए आवश्यक कदम उठाए जा सकते हैं। इसके अतिरिक्त, यह अध्ययन सरकारी और अशासकीय विद्यालयों के बीच की शैक्षिक असमानताओं को उजागर करता है, जिससे शैक्षिक प्रणाली को अधिक समावेशी और सुलभ बनाने में सहायता मिलती है। यह समाज में शैक्षिक अवसरों की समानता सुनिश्चित करने के लिए एक मार्गदर्शक का काम करता है और विद्यार्थियों के समग्र विकास को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन –
सम्बन्धित साहित्य से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सम्बन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान–कोषों, पत्र–पत्रिकाओं, प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध–प्रबन्धों एवं अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है।
किसी भी विषय के विकास में किसी विशेष शोध प्रारूप का स्थान बनाने के लिए शोधकर्ता को पूर्व सिद्धान्तों एवं शोधों से भली–भाँति अवगत होना चाहिए। इस जानकारी को निश्चित करने के लिए व्यवहारिक ज्ञान में प्रत्येक शोध प्रारूप की प्रारम्भिक अवस्था में इसके सैद्धान्तिक एवं शोधित साहित्य की समीक्षा करनी होती है, यहाँ साहित्य समीक्षा का अर्थ दिया गया।

सम्बंधित साहित्य

चौबे, साधना (2008) ने "वाराणसी मण्डल के वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में उपलब्ध संसाधनों एवं उनमें अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन" शीर्षक पर शोध कार्य किया, जिसका निष्कर्ष इस प्रकार रहा–

"वित्तपोषित उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों एव स्ववित्तपोषित उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है और यह अन्तर भी ज्यादातर संसाधनों के होने व न होने के कारण आया है। स्ववित्तपोषित विद्यालयों में (कुछ को छोड़कर) संसाधनों की कमी पायी गयी है। अतः इन्हीं विद्यालयों में शैक्षिक उपलब्धि भी कम पायी गयी है।

शोध में यह भी पाया गया कि वाराणसी मण्डल के ग्रामीण क्षेत्र के वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के संसाधनों में सार्थक अन्तर है। वित्तपोषित विद्यालयों में संसाधनों की संख्या स्ववित्तपोषित विद्यालयों के संसाधनों की तुलना में अधिक पायी गयी है। और इसी के अनुरूप शैक्षिक उपलब्धि भी देखी गयी है।

विश्वकर्मा, आशा (2011) ने अपने शोध–प्रबन्ध, "माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् वंचित छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि, मूल्यों एवं उनके शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन" में पाया कि – सी.बी.एस.ई. बोर्ड तथा यू.पी. बोर्ड की निम्न वंचित छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में सार्थक अन्तर पाया गया अर्थात् यू.पी. बोर्ड की अपेक्षा सी.बी.एस.ई. बोर्ड की निम्न वंचित छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि अधिक पायी गयी। सी.बी.एस.ई. बोर्ड की निम्न वंचित छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में मध्यमान यू.पी. बोर्ड की उच्च वंचित छात्राओं की तुलना में अधिक पाया गया तथा यह अन्तर 0.05 स्तर पर सार्थक भी पाया गया।

सिंह, दिनेश (2011) ने अपने शोध प्रबन्ध, "गोरखपुर मण्डल के हाईस्कूल विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का उनके सृजनात्मक क्षमता, बुद्धि एवं सामाजिक आर्थिक स्थिति के सन्दर्भ में अध्ययन" में लिखा है कि–

बालकों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सृजनात्मकता के मध्य उच्च धनात्मक सार्थक सह–सम्बन्ध है इसी प्रकार शैक्षिक उपलब्धि व वृद्धि के मध्य उच्च धनात्मक सार्थक सह सम्बन्ध है साथ ही शैक्षिक उपलब्धि सामाजिक आर्थिक स्थिति के मध्य असार्थक धनात्मक सह सम्बन्ध पाया गया है।

सिंह, सुनील प्रताप (2011) ने "माध्यमिक स्तर के छात्रों के आकांक्षा स्तर, समायोजन क्षमता एवं शैक्षिक उपलब्धि पर सृजनशीलता के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन" शीर्षक पर शोध किया जिसका निष्कर्ष इस प्रकार रहा– माध्यमिक स्तर के शहरी छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि सम्बन्धी प्राप्तांकों का मध्यमान 354. 50 माध्यमिक स्तर के ग्रामीण छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि सम्बन्धी प्राप्तांकों के मध्यमान 331.25 से अधिक है। अतः माध्यमिक स्तर के शहरी छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि माध्यमिक स्तर के ग्रामीण छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि से अधिक है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध निम्न उद्देश्य के अनुसार सम्पादित किया गया है –

1. अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पना

शोध अध्ययन में निर्धारित उद्देश्य की पूर्ति हेतु निम्नलिखित परिकल्पना बनाई गई हैं–

1. अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध विधि – प्रस्तुत अध्ययन में प्रयोगात्मक भोध की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है ।

जनसंख्या– जनसंख्या का तात्पर्य सम्पूर्ण इकाईयों के निरीक्षण से होता है। इसमें कुछ इकाईयों का चयन करके न्यादर्श बनाया जाता है। शोधकर्ता ने रीवा (म०प्र०) के अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत 200 छात्रों व 200 छात्राओं तथा इसी प्रकार 200 शहरी विद्यार्थियों व 200 ग्रामीण विद्यार्थियों को संभाव्यता न्यादर्शन के आधार पर न्यादर्श के रूप में चुना गया है।

न्यादर्शन – जनसंख्या (इकाई, वस्तुओं या मनुष्यों का समूह) में किसी चर का विशिष्ट मान ज्ञात करने के लिए उसकी कुछेक इकाइयों को चुन लिया जाता है तो इस चुनने की क्रिया को न्यादर्शन कहते हैं, तथा चुनी हुई इकाइयों के समूह को न्यादर्श कहते हैं। प्रस्तुत अध्ययन में संभाव्यता न्यादर्शन के आधार पर आकड़ों को लिया गया है।

शोध उपकरण

शैक्षिक उपलब्द्धि परीक्षण – प्रस्तुत शोध में अशासकीय विद्यालयों में अध्ययन करने वाले कक्षा छः के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्द्धि का मापन करने के लिए शोधकर्ता द्वारा हिंदी, गणित तथा सामाजिक विज्ञान विषयों से सम्बंधित स्वनिर्मित उपलब्द्धि परीक्षण का निर्माण किया गया है। यह परीक्षण इन विद्यार्थियों के उपर्युक्त विषयों में उनकी दक्षता को मापने के लिए उपयुक्त है। इस उपलब्द्धि परीक्षण में इन विषयों से सम्बंधित वस्तुनिष्ठ प्रकार के प्रश्नों को शामिल किया गया है। प्रत्येक विषय से सम्बंधित उपलब्द्धि परीक्षण में 25–25 प्रश्नों को रखा गया है।

अंकन विधि – प्रत्येक सही उत्तर के लिए 1 अंक तथा प्रत्येक गलत उत्तर के लिए 0 अंक प्रदान किया गया है।

शोध से प्राप्त परिणामों का सारणीबद्ध व उनकी व्याख्या अग्रवत है–

परिकल्पना 1. अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका 1: अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का विवरण

विद्यार्थी	संख्या	माध्य	मानक विचलन	स्वतन्त्रता मान	'टी' मान	टिप्पणी
छात्र	200	86.69	10.42	398	0.285	0.05 स्तर पर कोई सार्थक अंतर नहीं है।
छात्रा	200	85.79	11.52			

0.05 सार्थकता स्तर का मान =1.96

तालिका संख्या 1 यह दर्शाती है कि अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है। चूंकि परिगणित टी –मान (ज=0.285), 0. 05 सार्थकता स्तर के मान 1.96 से कम है अतः यह कहा जा सकता है कि अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है अतः परिकल्पना 1 स्वीकृत की जाती है तथा प्राप्त परिणाम को भी स्वीकार किया जाता हैं।

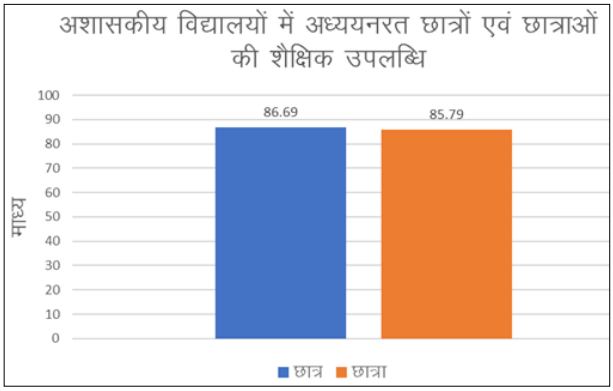

परिकल्पना 2. अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका 2: अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का विवरण

विद्यार्थी	संख्या	माध्य	मानक विचलन	स्वतन्त्रता मान	'टी' मान	टिप्पणी
शहरी	200	87.84	10.51	398	2.50	0.05 स्तर पर सार्थक अंतर है।
ग्रामीण	200	85.23	9.83			

0.05 सार्थकता स्तर का मान =1.96

तालिका संख्या 2 यह दर्शाती हैं कि अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि सार्थक अंतर नहीं है। चूंकि परिगणित टी –मान (ज=2.50),0.05 सार्थकता स्तर के मान 1.96 से अधिक है अतः अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है अस्वीकृत की जाती है तथा प्राप्त परिणाम को स्वीकार किया जाता हैं।

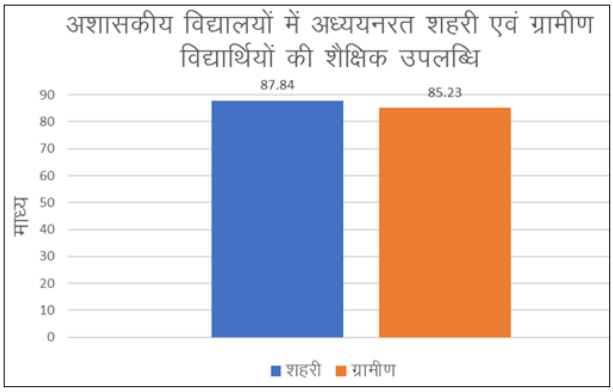

निष्कर्ष

अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों और छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं होने से संबंधित परिकल्पना के निष्कर्ष के अनुसार यह पाया गया कि इन विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों पर लिंग आधारित कारकों का प्रभाव नगण्य है। दोनों समूहों में उपलब्धियों के स्तर में समानता देखी गई जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि अशासकीय विद्यालयों में प्रदान की जाने वाली शैक्षिक सुविधाएं और शिक्षण प्रक्रियाएं लड़के और लड़कियों को समान रूप से लाभ पहुंचाती हैं। इस प्रकार, शैक्षिक प्रदर्शन में लिंग के आधार पर कोई महत्वपूर्ण भिन्नता नहीं देखी गई। शहरी और ग्रामीण अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के अंतर से जुड़ी परिकल्पना के अनुसार, शहरी क्षेत्रों में विद्यार्थियों को अधिक संसाधनों, बेहतर शिक्षण सुविधाओं, और अनुभवी शिक्षकों की सुविधा प्राप्त होती है जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि उच्च होती है। इसके विपरीत ग्रामीण क्षेत्रों में उपलब्ध शैक्षणिक संसाधनों और सुविधाओं की सीमितता के कारण विद्यार्थियों की उपलब्धि अपेक्षाकृत कम हो सकती है। यह अंतर सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक कारकों से भी प्रभावित हो सकता है जो शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास पर असर डालते हैं। इस परिकल्पना का निष्कर्ष यह है कि शहरी और ग्रामीण विद्यालयों के बीच शैक्षिक संसाधनों में असमानता विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में महत्वपूर्ण अंतर पैदा करती है।

शोध की उपयोगिता– अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह शिक्षा की गुणवत्ता और प्रभावशीलता को मापने में सहायक होता है। इस शोध से यह पता चलता है कि इन विद्यालयों में शिक्षण पद्धतियाँ, संसाधन और शैक्षणिक वातावरण सरकारी विद्यालयों की तुलना में किस प्रकार से भिन्न हैं और वे विद्यार्थियों के सीखने के स्तर को कैसे प्रभावित करते हैं। इसके माध्यम से नीति–निर्माताओं को शिक्षा प्रणाली में सुधार के लिए साक्ष्य आधारित निर्णय लेने में सहायता मिलती है। इसके अलावा, यह शोध अभिभावकों और शिक्षकों को बेहतर शैक्षिक विकल्प चुनने में भी मार्गदर्शन प्रदान करता है।

सन्दर्भ सूची

1. शर्मा, आर0ए0 (2008) : भारतीय शिक्षा प्रणाली का विकास, आर0लाल बुक डिपो, मेरठ।
2. भटनागर, डॉ0 ए0बी0 (2008) : अधिगम एवं शिक्षण, आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ।
3. अग्रवाल, डॉ0 नीता (2008) : बाल विकास, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।
4. नागर, डॉ0 बीनू एवं राजपूत, डॉ0 आशा (2010) : बाल विकास आगरा पब्लिकेशन, आगरा।
5. जायसवाल, सीताराम (2012) : व्यक्तित्व का मनोविज्ञान, श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
6. श्रीवास्तव, डी0एन0 एवं पाठक, के0पी0 (2012) : बाल विकास एवं बाल मनोविज्ञान, आगरा पब्लिकेशन, आगरा।
7. श्रीवास्तव, महेन्द्र नाथ एवं कुमार सतीश (2014) : बाल विकास एवं सीखने की प्रक्रिया, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।
8. श्रीवास्तव, डॉ0 डी0एन0 (2020) : अनुसंधान विधियां, साहित्य प्रकाशन, आगरा।
9. गुप्ता, प्रो0 एस0पी0 एवं गुप्ता, डॉ0 अलका, (2013) : सांख्यिकीय विधियाँ, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
10. राय, पारस नाथ (2008) : अनुसंधान परिचय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा।
11. सिंह, अरूण कुमार (2017) : मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, मोतीलाल बनारसीदास, बनारस।
12. कौल, बी. डी. (2015): वैज्ञानिक सृजनात्मकता का विकास, ज्ञान पब्लिशर्स, नई दिल्ली ।
13. मिश्रा, आर. पी. (2018): विज्ञान शिक्षा में रचनात्मकता तथा अवधारणा और क्रियान्वयन. नालंदा पब्लिकेशन, पटना ।
14. शर्मा, एस. के. (2020): सृजनात्मकता ,नवाचार तथा शिक्षा और अनुसंधान में नये आयाम. प्रभात प्रकाशन, वाराणसी ।
15. त्रिपाठी, एम. (2016): वैज्ञानिक चिंतन और रचनात्मकता भारतीय दृष्टिकोण. मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल ।
16. गुप्ता, ए. (2017): शिक्षा में वैज्ञानिक दृष्टिकोण और सृजनशीलता का महत्व, सूरज पब्लिकेशन, जयपुर ।
17. सिंह, पी. (2021):वैज्ञानिक अनुसंधान में रचनात्मकता और नवाचार, नई सृष्टि पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
18. shodhganga.inflibnet.ac.in